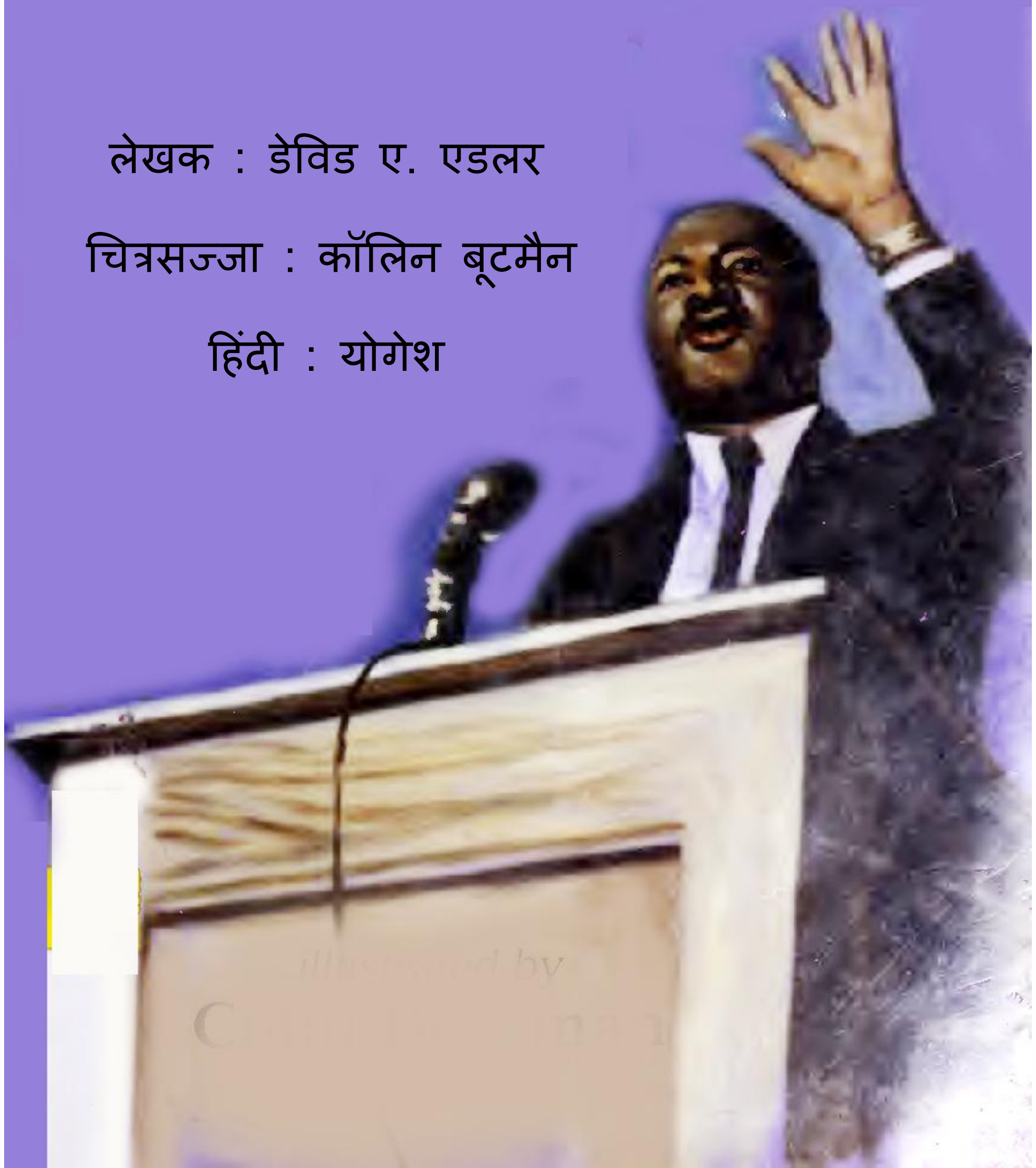
डॉक्टर मार्टिन लूथर किंग, जूनियर

लेखक : डेविड ए. एडलर

चित्रसज्जा : कॉलिन बूटमैन

हिंदी : योगेश



डॉक्टर मार्टिन लूथर किंग, जूनियर

लेखक : डेविड ए. एडलर

चित्रसज्जा : कॉलिन बूटमैन

हिंदी : योगेश



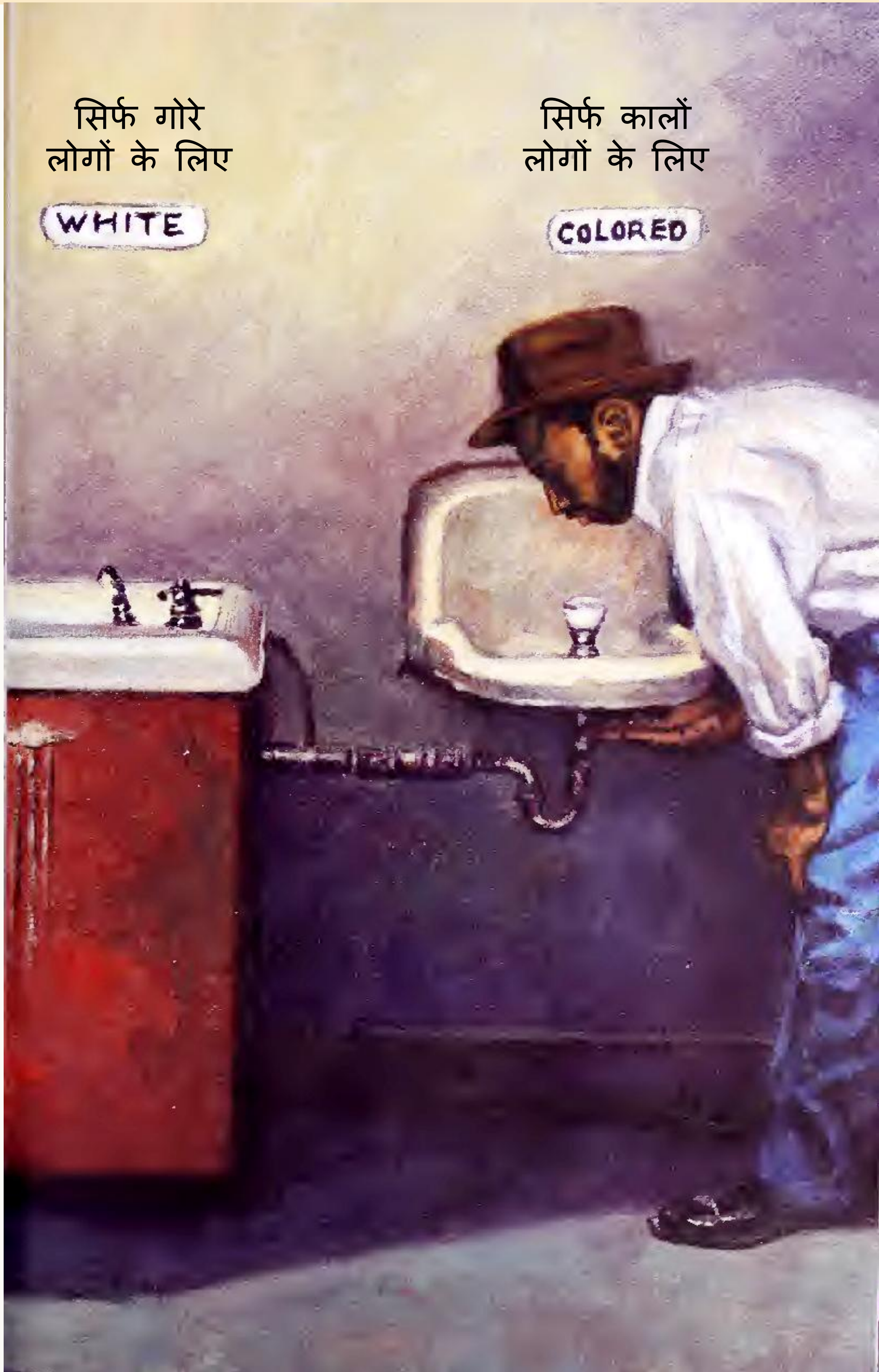
अनुक्रमाणिका

१. युवा मार्टिन लूथर किंग जूनियर

मार्टिन लूथर किंग जूनियर का जन्म 1929 में अटलांटा, जॉर्जिया में हुआ था। उनके पिता एक पादरी थे। उनकी माता शिक्षिका थीं। मार्टिन ने बहुत जल्दी यह सीख लिया कि क्योंकि वह अफ्रीकी-अमेरिकी थे, और उनकी त्वचा काली थी, कई स्थान उनके लिए बंद थे।



अटलांटा व अन्य शहरों में बहुत स्थानों पर "सिर्फ गोरे लोगों के लिए" (Whites Only) के निशान लगे थे। कई होटल, रेस्तराँ, रेलगाड़ियाँ, पार्क, स्विमिंग पूल और स्कूल अफ्रीकी-अमेरिकियों के लिए बंद थे। कई शहरों में काले लोग बसों में केवल पीछे की सीटों पर बैठ सकते थे। वे सिनेमा घरों में केवल बालकनी में बैठ सकते थे। वे गोरे लोगों के घरों में सिर्फ पिछला दरवाज़ा इस्तेमाल करके ही प्रवेश कर सकते थे।





जब मार्टिन छह साल के थे, उन्हें बताया गया कि उनके दो दोस्त अब उनके साथ नहीं खेल सकते। ऐसा इसलिए था क्योंकि मार्टिन काले थे और वे गोरे थे।



मार्टिन घर वापस जाकर रोने लगे। उन्हें समझ नहीं आया कि लोगों को त्वचा के रंग से भला क्या फर्क पड़ता है?

फिर मार्टिन की माँ और दादी ने उन्हें घृणा और द्वेष के बारे में बताया। उन्होंने यह भी बताया कि मार्टिन उतने ही अच्छे थे जितने कि अन्य बच्चे।

मार्टिन ने बाद में कहा कि उन्होंने उन्हें “स्वाभिमान” (somebodiness) के बारे में भी सिखाया – यह विश्वास कि हर व्यक्ति महत्वपूर्ण होता है।



२. मार्टिन के पिता





"भले की कानूनन मुझे पीछे की सीट पर सवारी करनी पड़े," उन्होंने अपने बेटे से कहा, "लेकिन मेरा मन सदा आगे ही रहता है।"

मार्टिन के पिता एक स्वाभिमानी व्यक्ति थे। अफ्रीकी मूल के अमेरिकनों के साथ जो बर्ताव किया जाता था, वह उन्हें बिलकुल पसंद नहीं था।

एक बार मार्टिन अपने पिता के साथ जूते खरीदने के लिए गए। वहां क्लर्क ने उन्हें दूकान के पिछली ओर इंतज़ार करने के लिए कहा। लेकिन मार्टिन के पिता ने मना कर दिया। या तो वे दूकान में सामने की ओर जूता खरीदेंगे, या फिर नहीं खरीदेंगे। फिर उन्होंने मार्टिन का हाथ पकड़ा, और दूकान से बाहर चल दिये।



प्रत्येक रविवार को मार्टिन अपने पिता को गिरिजाघर में व्याख्यान देते हुए सुनते थे। उनके पिता के शब्द और विचार लोगों को मंत्रमुग्ध सा कर देते थे। मार्टिन ने अपनी माँ से कहा, "मैं भी ऐसे ही शब्द बोलना सीखूंगा।





मार्टिन ने बहुत पढ़ाई की।

वह एक अच्छे विद्यार्थी थे।

पंद्रह वर्ष की अवस्था में ही वह कॉलेज में भर्ती हो गए थे।

और अठारह तक पहुँचते वह चर्च में पादरी बन गए थे।

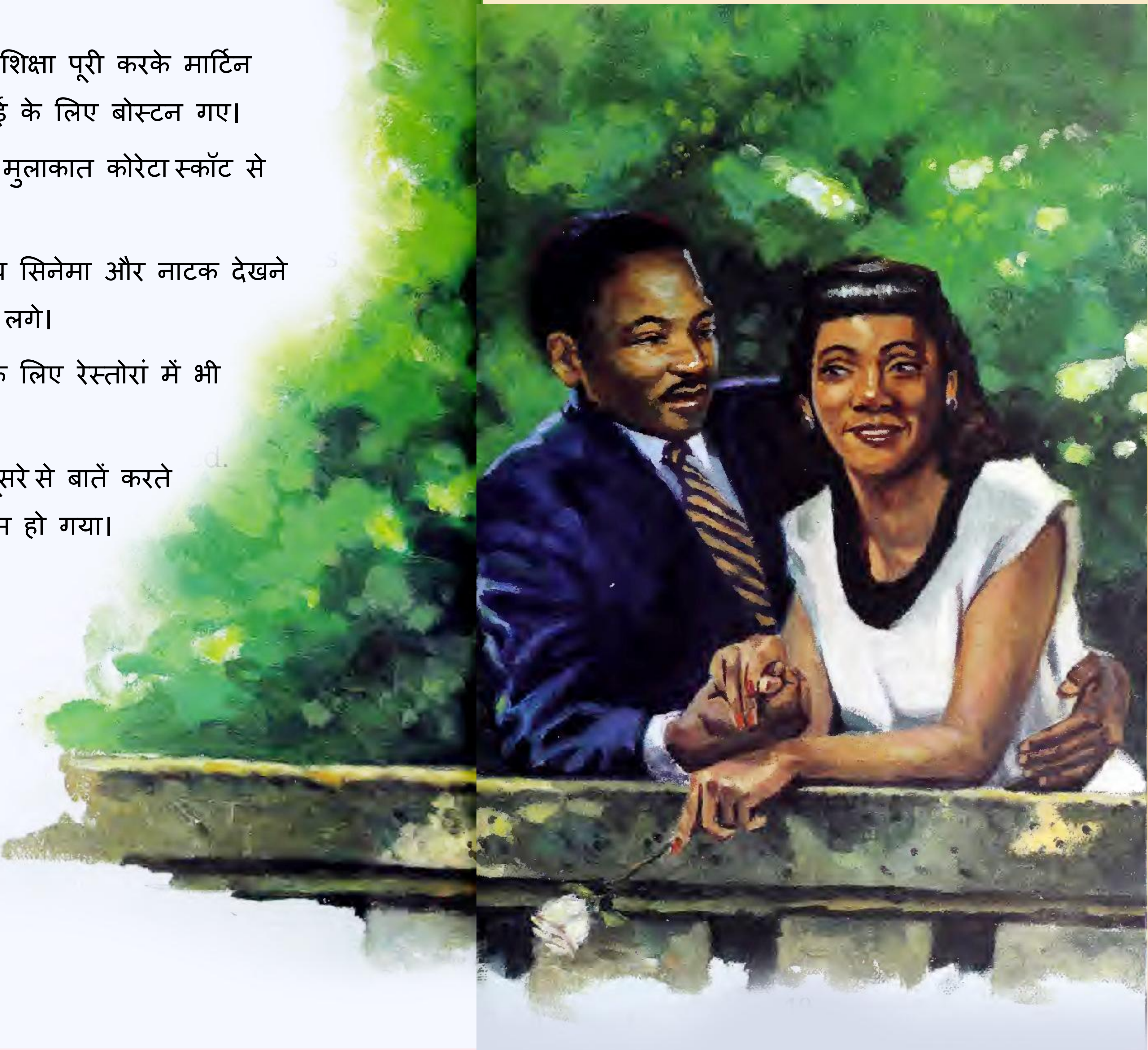
कॉलेज की शिक्षा पूरी करके मार्टिन आगे की पढाई के लिए बोस्टन गए।

वहां उनकी मुलाकात कोरेटा स्कॉट से हुई।

वे साथ-साथ सिनेमा और नाटक देखने के लिए जाने लगे।

वे भोजन के लिए रेस्तोरां में भी मिलते।

और एक दूसरे से बातें करते करते उन्हें प्रेम हो गया।





जून १९५३ में मार्टिन लूथर किंग और कोरेटा स्कॉट का विवाह हो गया।

१९५४ में मार्टिन लूथर किंग को मोन्ट्गोमेरी, अलाबामा में पादरी के पद पर नियुक्ति मिल गई। अगले वर्ष उन्होंने अपनी शिक्षा भी पूरी कर ली। अब वह डॉक्टर किंग बन चुके थे।

3. मोंटगोमरी का बस बहिष्कार

बृहस्पतिवार, एक दिसंबर १९५५ को मोंटगोमरी, अलाबामा में एक बस ड्राइवर ने चार अश्वेत लोगों को सीट से उठने को कहा। उसने कहा कि वे श्वेत यात्रियों के लिए जगह खाली कर दें।



उनमे से तीन तो उठ गए। लेकिन एक नहीं उठा। रोज़ा पार्क अपनी सीट में ही बैठी रही। और उसे गिरफ्तार कर लिया गया। सोमवार, ५ दिसंबर को एक न्यायाधीश ने कहा कि उसने कानून का उल्लंघन किया है।





डॉक्टर किंग ने इस अन्यायपूर्ण कानून के विरोध में एक अभियान चलाया।

मोंटगोमरी के अफ़्रीकी लोगों ने बस से सफर करना बंद कर दिया। डॉक्टर किंग ने इस विषय पर भाषण भी दिए।

उन्होंने मोंटगोमरी बस बहिष्कार का नेतृत्व किया।

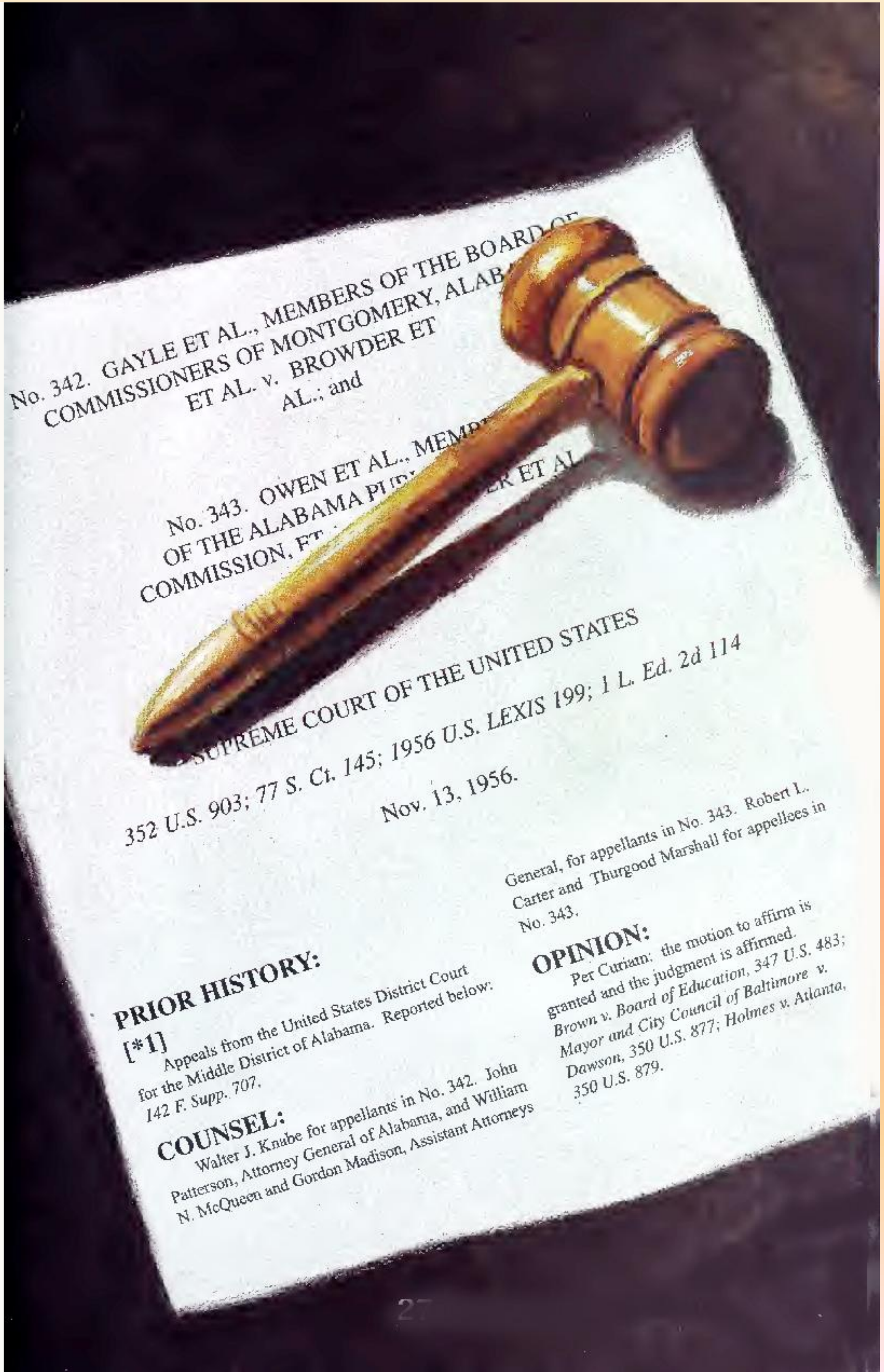
लोग बहुत नाराज़ थे।

वे लड़ने तक को तैयार थे।

परन्तु डॉक्टर किंग ने कहा,

"हमें घृणा का उत्तर प्रेम से देना है।"

एक वर्ष से भी अधिक समय तक मोंटगोमरी के अफ़्रीकी लोग बसों में नहीं बैठे। फिर अमेरिका की सर्वोच्च अदालत ने फैसला सुनाया कि अश्वेतों को श्वेतों के लिए सीट छोड़ने को बाध्य करना न्याय के विरुद्ध है। और अश्वेत लोगों को बसों में पीछे की ओर बैठने के लिए बाध्य करना भी अन्यायपूर्ण है।



२१ दिसंबर १९५६ को बहिष्कार समाप्त हो गया।

उस दिन मोंटगोमरी, अलाबामा में डॉ. किंग और रोज़ा पार्क ने सार्वजनिक बस पर यात्रा की। वे बस में सामने की ओर बैठे।



४. एक शक्तिशाली शांति-दूत

डॉ. किंग संयुक्त राज्य अमेरिका में सभी लोगों के नागरिक अधिकारों की लड़ाई के एक प्रमुख नेता थे।

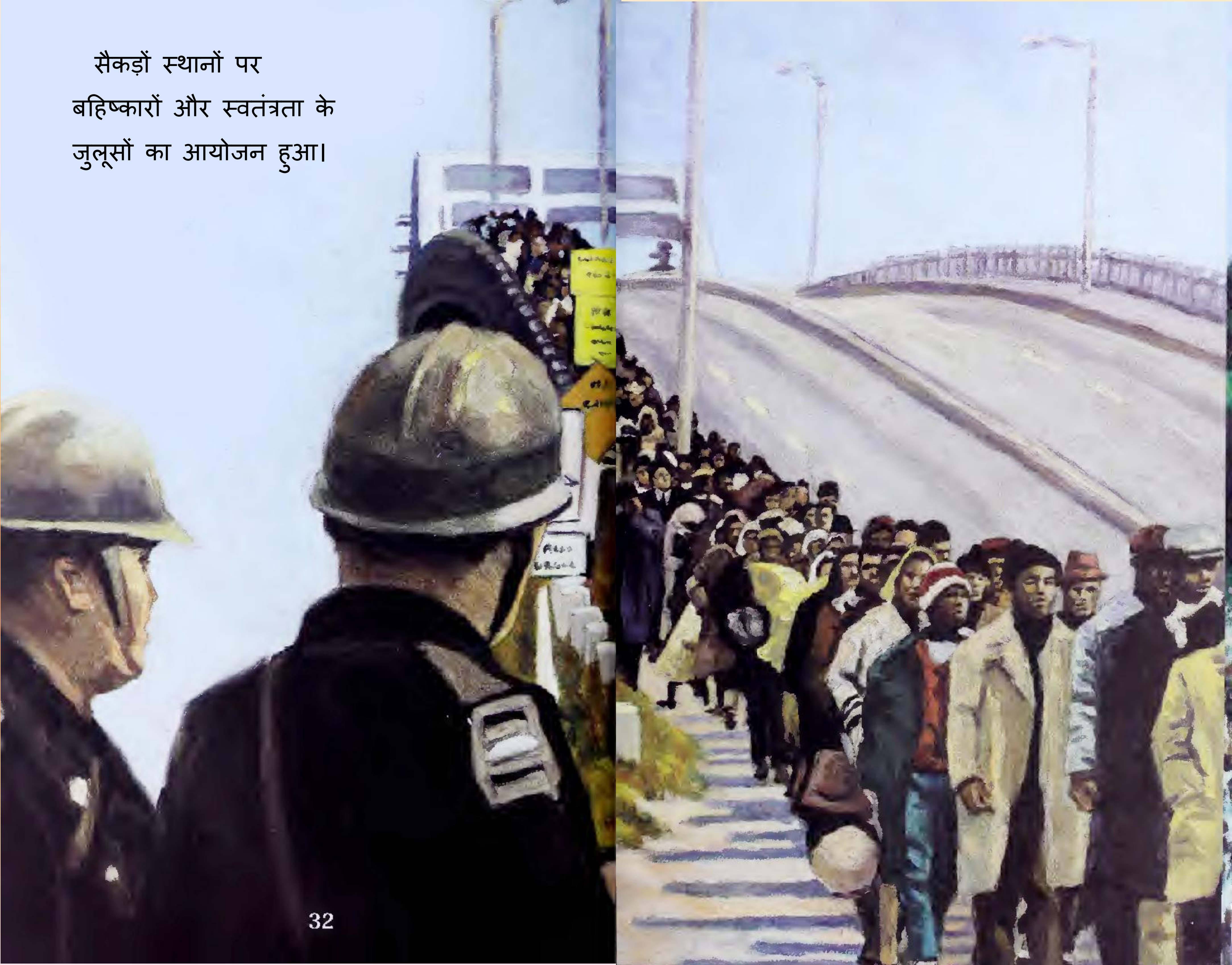


इन अधिकारों के लिए कई जगह धरने भी हो रहे थे। अश्वेत लोग श्वेतों के लिए आरक्षित भोजन के स्थानों पर जाकर बैठ गए, और भोजन परोसने की मांग करने लगे।

फिर “फ़्रीडम राइड्स” का चलन शुरू हुआ। काले और गोरे "फ़्रीडम राइडर्स" बसों में साथ-साथ सफ़र करते थे। वे गोरों के लिए आरक्षित प्रतीक्षा कक्षों में साथ बैठते थे। वे गोरों के लिए आरक्षित शौचालयों का भी उपयोग करते थे।



सैकड़ों स्थानों पर
बहिष्कारों और स्वतंत्रता के
जुलूसों का आयोजन हुआ।



सबसे बड़ा जुलूस अगस्त १९६३ में निकला गया। यह जुलूस वाशिंगटन में आयोजित हुआ। डॉक्टर किंग ने वाशिंगटन स्मारक से समूह को सम्बोधित किया।

"मेरा एक सपना है," उन्होंने कहा, कि एक दिन हमारे देश में, "लोगों को त्वचा के रंग से नहीं आँका जायेगा, बल्कि उनके चरित्र से आँका जायेगा।"





डॉक्टर किंग ने नागरिक अधिकारों के इस संघर्ष का नेतृत्व किया।

उन्होंने विधायकों और राष्ट्रपतियों से मुलाकातें कीं।

उन्होंने एक शांतिपूर्ण संघर्ष किया।

"अगर आपको धक्का दिया जाये," उन्होंने कहा, "तो आप वापस धक्का न दें।

आप पर प्रहार हो तो वापस प्रहार न करें।"



उन्होंने अपने अनुयायियों को घृणा का मुकाबला प्रेम से करने की शिक्षा दी।

वे एक सशक्त शांति-दूत थे।

अपने अच्छे कार्यों के लिए डॉक्टर किंग को १९६४ में नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

परन्तु उनके लिए सबसे बड़े पुरस्कार वे कानून थे जिन्हें उनके प्रयासों से पारित किया गया।





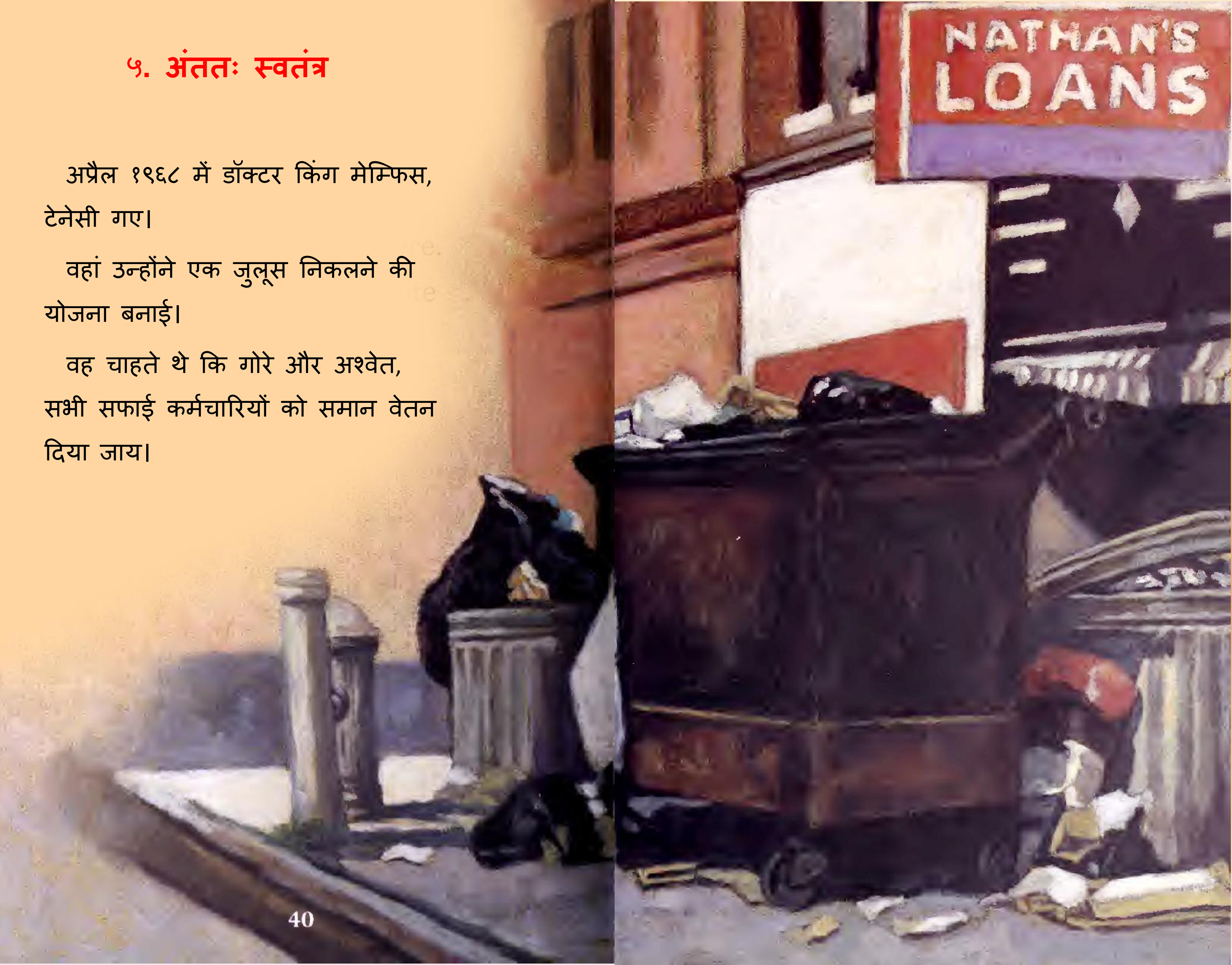
यानि, १९६४ का सामाजिक अधिकार कानून, और १९६५ का मताधिकार कानून, जो कि सभी धर्मों व जातियों के लोगों के अधिकारों की रक्षा करते हैं।

५. अंततः स्वतंत्र

अप्रैल १९६८ में डॉक्टर किंग मेम्फिस, टेनेसी गए।

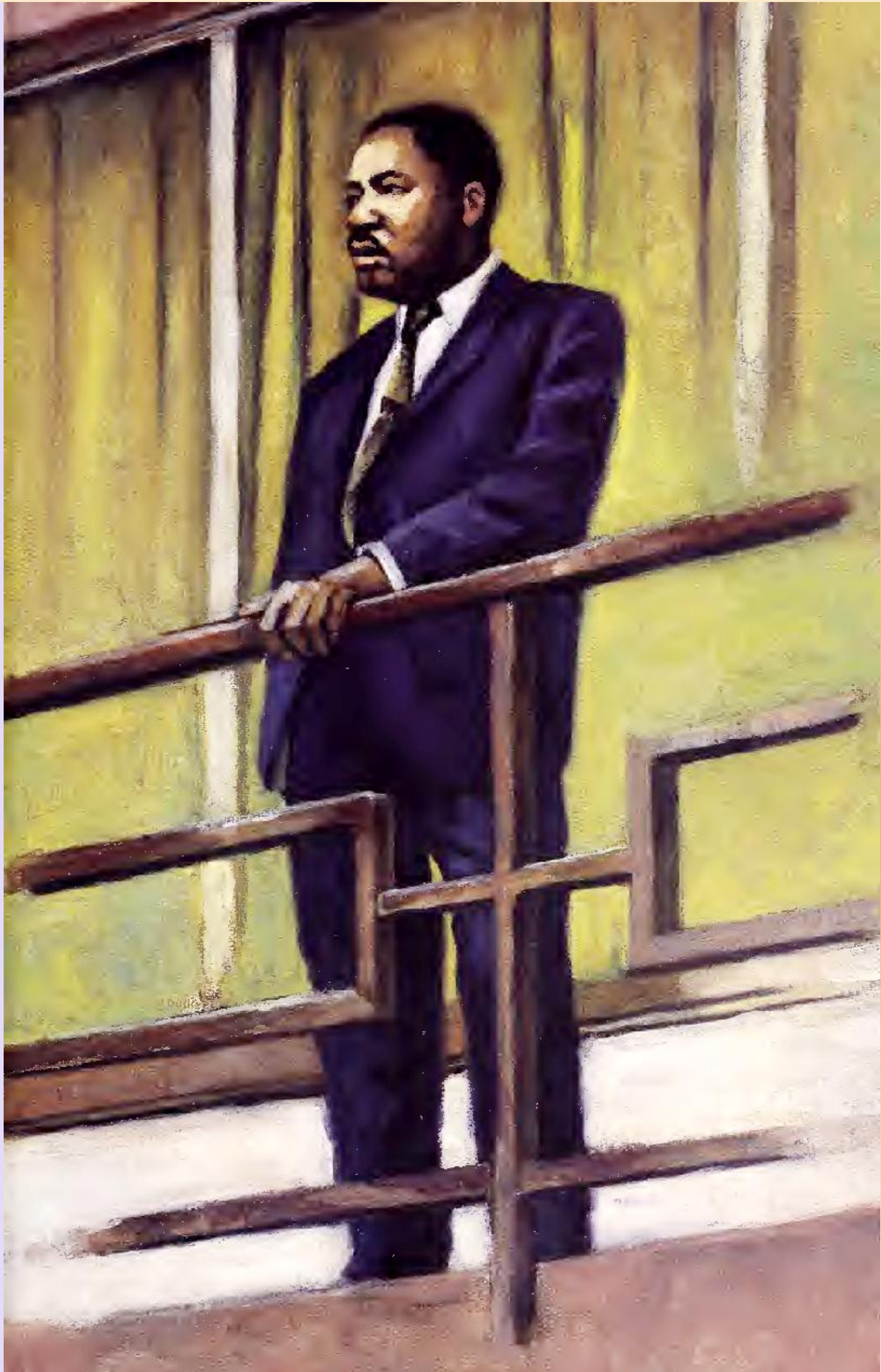
वहां उन्होंने एक जुलूस निकलने की योजना बनाई।

वह चाहते थे कि गोरे और अश्वेत, सभी सफाई कर्मचारियों को समान वेतन दिया जाय।



जुलूस की पिछली रात वह अपने होटल के बाहर खड़े थे।

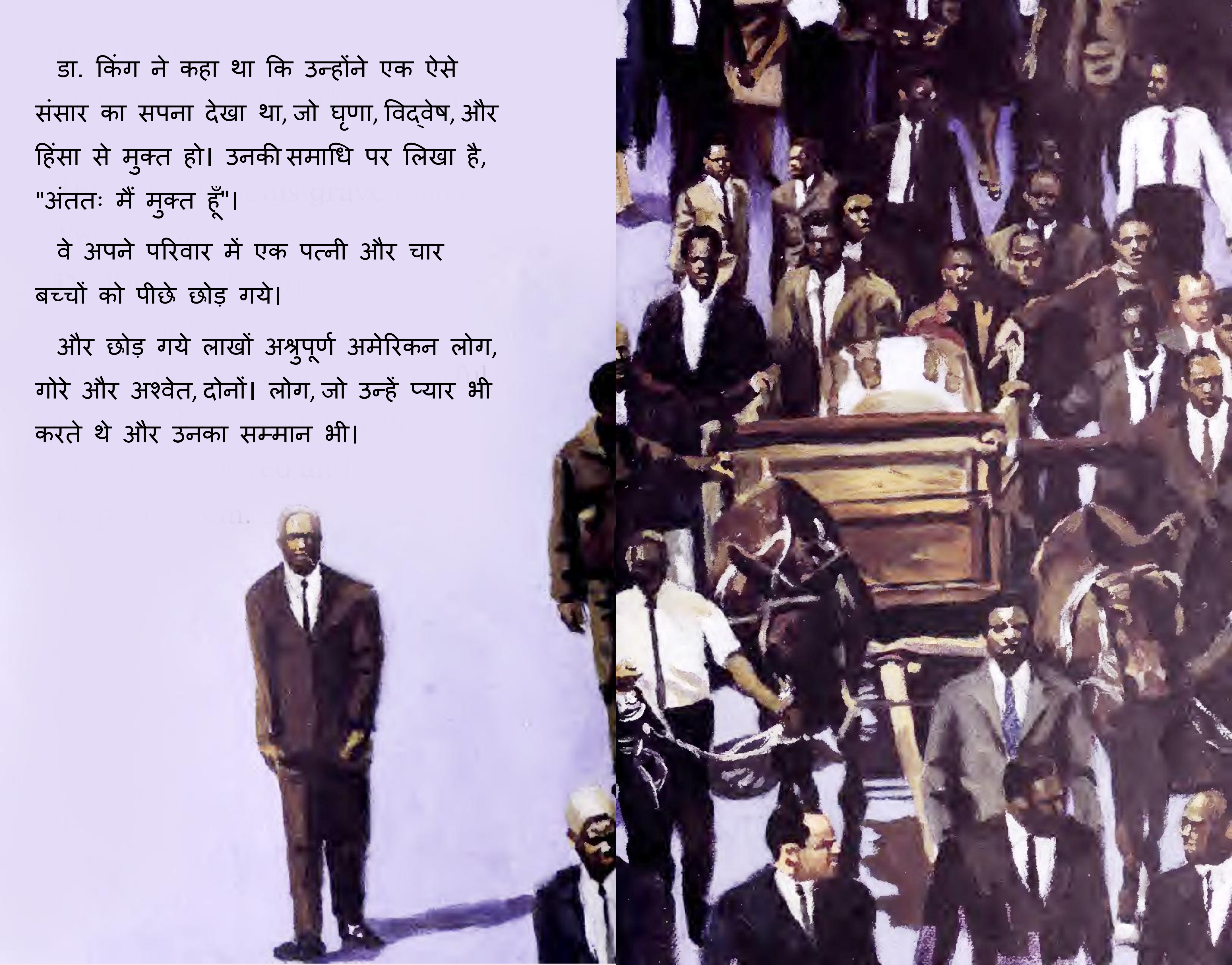
उनके सामने की इमारत के एक शौचालय में छिपा हुआ था एक व्यक्ति, जिसका नाम था जेम्स अर्ल रे। उसने अपनी राइफल से निशाना लगाया, और गोली चला कर डा. किंग की हत्या कर दी।



डा. किंग ने कहा था कि उन्होंने एक ऐसे संसार का सपना देखा था, जो घृणा, विद्वेष, और हिंसा से मुक्त हो। उनकी समाधि पर लिखा है, "अंततः मैं मुक्त हूँ"।

वे अपने परिवार में एक पत्नी और चार बच्चों को पीछे छोड़ गये।

और छोड़ गये लाखों अश्रुपूर्ण अमेरिकन लोग, गोरे और अश्वेत, दोनों। लोग, जो उन्हें प्यार भी करते थे और उनका सम्मान भी।



जनवरी के महीने के तीसरे सोमवार को अमेरिका में राष्ट्रीय अवकाश घोषित कर दिया गया है। इस दिन वहां डॉक्टर मार्टिन लूथर किंग के जीवन का उत्सव मनाया जाता है। डॉ. किंग, जो एक सशक्त शांति-दूत थे।



प्रमुख तारीखें

१५ जनवरी, १९२९

एटलांटा जॉर्जिया में मार्टिन लूथर किंग का जन्म।

२५ फरवरी १९४८

मार्टिन लूथर किंग की एक पादरी के रूप में नियुक्ति।

१८ जून १९५३

मार्टिन और कोरेटा स्कॉट का विवाह।

१९५५-५६

डॉ. किंग द्वारा मॉन्टगोमेरी के बस बहिष्कार का नेतृत्व।

२८ अगस्त १९६३

डॉ. किंग का वाशिंगटन का प्रसिद्ध व्याख्यान जिसमें उन्होंने कहा "मेरा एक स्वप्न है"।

१० दिसम्बर १९६४

डॉ. किंग को नोबेल पुरस्कार मिला।

४ अप्रैल, १९६८

जेम्स अर्ल रे द्वारा मेम्फिस टेनेसी में डॉ. किंग की हत्या।

१९८६

मार्टिन लूथर किंग दिवस पर राष्ट्रीय अवकाश की घोषणा।